दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 16.09.2021

प्रकाशनार्थ

आज दिनांक 16 सितम्बर 2021 को युगपुरूष महंत दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यानमाला के सातवें दिन समापन समारोह में 'राष्ट्र वाद की अवधारणा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए प्रो. कल्पलता पाण्डेय, कुलपति, जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया ने ओशो के कथन का उल्लेख करते हुए कहा कि भगवान कृष्ण, बुद्ध, पतंजलि तथा गुरू गोरखनाथ के बिना अखण्ड भारत की कल्पना असंभव है। उन्होंने पुनः कहा कि गुरू गोरखनाथ संत परम्परा के शिरोमणि थे लेकिन किसी कारणवश इनको जितना यश प्राप्त होना चाहिए वह नही हो सका। ऋगवेद मे सर्वप्रथम राष्ट्र शब्द का उल्लेख हुआ है और कहा गया है कि राष्ट्र एक भौगोलिक नही बल्कि सांस्कृतिक इकाई है। जो भारतीयों की आत्मा है। राष्ट्रवाद एक मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक संकल्पना है जिसमें विस्तार को स्थान नहीं और भारत माता के स्वरूप की कल्पना ही हमारे राष्ट्र का प्रतीक है। इनका यह भी कहना था कि लोगों के विचार और सोच में भेद हो सकते है लेकिन मन का भेद संभव नही और यही हमारी बौद्धिक सम्पदा है। जो हमें ऋषियों से वरदान स्वरूप प्राप्त हुआ राष्ट्र मानवता को एक सूत्र में पिरोता है। इनका माननात था कि चित्त और राष्ट्र एक दूसरे के पर्याय है जो ईश्वर की देन हैं और जब दोनों अलग होगें तो राष्ट्र खतरे में पड़ सकता है। राष्ट्रवाद वसुधैव कुटुम्बकम को चरितार्थ करता है सहिष्णुता और सामुदायिकता हमारा संकल्प है इसलिए ईश्वर ने एक विशिष्ट प्रेरणा के साथ राष्ट्र की स्थापना की चित्त इसकी आत्मा या प्राण है। पुनः इन्होने शिक्षा का उल्लेख करते हुए कहा कि यह राष्ट्र की शक्ति है लेकिन दुर्भाग्य से अतीत में यह आसुरी प्रवृतियों के प्रभाव में आ गयी थी और कुछ कालखण्ड तक हमने अंग्रेजो की सांस्कृतिक दासतां को स्वीकारा। नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ही इस मानसिक गुलामी से मुक्ति का विकल्प है जो पूर्णतया भारतीय मूल्यों से ओत–प्रोत, उच्च गुणवत्ता, भारत को वैश्विक ज्ञानी, नैतिक दायित्वों और उनके संवैधानिक मूल्यों को जागृत करने वाली नीति है। जो एक रोजगार परक तथा आत्म निर्भरता का पक्षधर है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए डॉ. सर्वेश पाण्डेय क्षेत्र संयोजक, स्वदेशी जागरण मंच, पूर्वी उत्तर प्रदेश ने कहा कि सभी वेदों में राष्ट्र को जागृत करने की बात कही गयी है सभी वेदों में जागृति करने की बात कही गयी है जो भौगोलिक इकाई से बंधी नही होती हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली ने खण्ड–खण्ड सोचने की प्रवृति को बढ़ावा दिया। जिससे समाज में अहंकार पैदा हुआ। इसके विपरीत नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति एकात्मवादी दृष्टिकोण तथा समग्रता में एकता की सोच को बढ़ावा

दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

देगा। जिससे शरीर, मन और आत्मा का शोधन होगा राष्ट्र मानव की चेतना मे निवास करता है। राष्ट्रीय शिक्षा गुणात्मक शिक्षा को जन्म देगी जो समावेशी होगी तथा जीवन पर्यन्त सीखने वाली पद्धति होगी।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. वीणा गोपाल मिश्रा ने कहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति चित्त और प्रवृति का एकीकरण उसे पुर्नजीवित करने वाली नीति होगी, जिससे नागरिकों में नवचेतना का जागरण होगा।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में प्राचार्य ने अतिथियों का स्वागत उत्तरीय और स्मृति चिन्ह प्रदान कर किया। प्रस्ताविकी एवं स्वागत भाषण संयोजक डॉ. सत्यपाल सिंह ने किया। संचालन डॉ. सीमा श्रीवास्तव तथा आभार ज्ञापन गुआक्टा के महामंत्री डॉ. धीरेन्द्र सिंह ने किया।

कार्यक्रम मे महाविद्यालय के शिक्षक डॉ. अरूण कुमार तिवारी, डॉ. परीक्षित सिंह, डॉ. शशि प्रभा सिंह, डॉ. प्रतिमा सिंह, डॉ. अनीता कुमारी, डॉ. शुभ्रा श्रीवास्तव, डॉ. विवेक शाही, डॉ. सुभाष चन्द्र, मनीष श्रीवास्तव, डॉ. संजय त्रिपाठी, डॉ. अखण्ड प्रताप सिंह, डॉ. रूक्मिणी चौधरी, डॉ. कामिनी सिंह आदि सहित छात्र–छात्राएं उपस्थित थे।

डॉ.(वीणा गोपाल मिश्रा)
प्राचार्य